जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

विषय-भोग बहुत सरल दिखते हैं; किन्तु उनका फल भोगते समय, वे बहुत मँहगे पड़ते हैं।

वर्ष : 28, अंक : 8 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (द्वितीय)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

अनेक स्थानों पर शिविर एवं विधान सानन्द सम्पन्न

1. मलकापुर (महा.) : यहाँ प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्री प्रेमचन्दजी निरखे परिवार की ओर से मिथ्यात्वरूपी ग्रीष्मकाल को तत्त्वज्ञानरूपी वर्षा की बहार से शमन करने हेतु दिनांक 3 से 22 जून, 2005 तक श्रुतस्कंध विधान एवं तत्त्वज्ञान शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षा ली गई तथा पण्डित सुनीलकुमारजी 'धवल' भोपाल, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अमोलजी संघई हिंगोली का भी लाभ प्राप्त हुआ। विधि-विधान के कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **- विनोद निरखे**

2. बाँसबाड़ा (राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक चैरिटेबल ट्रस्ट एवं आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान द्वारा दिनांक 17 से 21 जून तक द्वितीय प्रवेश-पात्रता शिविर व विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, अलीगढ़ के प्रात: समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त पण्डित रीतेशजी शास्त्री डडूका, पण्डित मनोजजी शास्त्री एवं पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर द्वारा विभिन्न विषयों पर कक्षायें ली गई।

समस्त कार्यक्रम पण्डित राजकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **ह्न महीपाल ज्ञायक**

3. खंडवा (म.प्र.) : यहाँ प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल, खंडवा के तत्त्वावधान में चतुर्थ जैनधर्म संस्कार शिविर का आयोजन दिनांक 25 से 30 जून, 2005 तक किया गया।

शिविर में पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अनिलजी बेलोकर सुल्तानपुर, पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित सुनीलजी बेलोकर सुल्तानपुर, पण्डित सुरेशजी काले राजुरा के प्रवचन एवं कक्षाओं द्वारा बालकों को संस्कारित किया गया।

30 जून को शिविर समापन के अवसर पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के मार्मिक प्रवचनोपरांत पुरस्कार वितरण किया गया। **ह्न हेमन्त जैन**

4. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ साधनानगर स्थित श्री पंच बालयति एवं विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय में श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के अन्तर्गत दिनांक 22 से 26 जून, 05 तक 170 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन खासगीवाल परिवार-तिलकनगर वालों के सहयोग से किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर के दोनों समय मार्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। अन्तिम दिन युवाओं के लिये हुये विशेष प्रवचन ने उपस्थित जन समुदाय को झकझोर दिया।

आयोजन में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल एवं पण्डित सुशीलजी राघौगढ़ का विशेष सहयोग मिला।

5. उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं दोशी परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर दिगम्बर जैन मन्दिर में दिनांक 4 से 12 जून, 2005 तक सिद्धचक्र विधान एवं बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना के तीनों समय प्रासंगिक व विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा पण्डित विमलचन्दजी झांझरी एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी के भी प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अजीतजी शास्त्री, अलवर द्वारा सम्पन्न कराये गये। साथ ही पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित अनुभवजी व पण्डित सुमितजी जैन, अलीगढ़ एवं स्थानीय विद्वान पण्डित सुरेन्द्रजी जैन, पण्डित सुबोधजी जैन, ब्र. समताजी, ब्र. ज्ञानधाराजी एवं पुष्पलताबेन का शिक्षण कक्षाओं में सहयोग प्राप्त हुआ। **ह्न जम्बु जैन 'धवल'**

6. उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, उदयपुर के तत्त्वावधान में एवं श्री कन्हैयालाल दलावत परिवार तथा सूरजबाई मदनलाल जेतावत चैरि. ट्रस्ट उदयपुर के सहयोग से दिनांक 12 से 16 जून, 05 तक नवलब्धि विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन हुआ।

शिविर में प्रात: पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, अलीगढ़ एवं रात्रि में पण्डित मनीषजी शास्त्री, रहली के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए।

साथ ही उदयपुर के उपनगरों **सेक्टर -11 में** पण्डित आकाशजी शास्त्री डडूका, **प्रभातनगर में** डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर, **गारियावास में** पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, **मुमुक्षु मण्डल से. 9 में** पण्डित संजयजी शास्त्री गनोड़ा एवं पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर, **केशवनगर में** पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर तथा **नेमिनाथ कॉलोनी में** पण्डित अंकितजी लूणदा द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

विधान के कार्य पं. निलयजी शास्त्री, पं. आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं पं. रत्नेशजी शास्त्री हिम्मतनगर ने सम्पन्न कराये। शिविर पं. राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। **(शेष पृष्ठ 8 पर.....)**

आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर की आमन्त्रण पत्रिका
दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2005 तक

आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर की आमन्त्रण पत्रिका
दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2005 तक

सम्पादकीय –

नींव का पत्थर

6 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

वस्तु स्वातंत्र्य और अहिंसा : एक विरोधाभास

प्रतिदिन की भाँति आज भी माँ समता श्री का प्रवचन प्रातः ठीक ८.१५ पर प्रारंभ हुआ। विराग और चेतना को श्रोताओं की प्रथम पंक्ति में बैठे और प्रवचन की प्रतीक्षा करते देख माँ गौरवान्वित तो हुई ही, मन ही मन प्रसन्न भी हुई; क्योंकि प्रायः होता यह है कि दुनियाँ की दृष्टि में भगवान जैसा महत्व होने पर भी बेटा-बहू और घर-परिवार वालों को घर के विद्वान वक्ता की महिमा नहीं आती। यद्यपि इसमें मात्र परिवार वालों का ही दोष नहीं होता, किन्हीं-किन्हीं पारिवारिक धर्मप्रवक्ताओं का दुहरा व्यक्तित्व भी इसमें कारण होता है; वे घर-परिवार में कुछ और होते हैं और धर्मक्षेत्र में कुछ और। परन्तु माँ समता श्री उन लोगों में नहीं है, उनका हृदयपूर्ण पवित्र है, वे जो कुछ करती हैं, वह सब स्वान्त-सुखाय ही करतीं हैं तथा जो कुछ कहती हैं, वह सब पवित्र भावना से परहिताय ही कहती हैं, उसमें उनका किंचित भी निजी (व्यक्तिगत)कोई लौकिक स्वार्थ नहीं होता।

यों समताश्री अपने बेटे-बहु को भी बेटे-बहू की दृष्टि से कम और आत्मार्थी के नजरिये से अधिक देखती है। अतः उनके लक्ष्य से प्रवचन करने पर भी अन्य सभी श्रोता हर्षित ही होते हैं। विराग की पैनी बुद्धि से उद्‌भूत हुई शंकाओं का समाधान करने से अन्य साधर्मी भी बहुत लाभान्वित होते हैं।

'वस्तु स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा की स्थिति कैसे संभव है?' इस प्रश्न के समाधान के लिए विराग और चेतना आतुर हैं। वे सही-सही समाधान पाने के प्रति पूर्ण आश्वस्त हैं। उन्हें विश्वास है कि आज उनकी बहुत दिनों से उलझी पहेली सुलझेगी, उन्हें उनकी शंकाओं का समाधान मिल ही जायेगा।

माँ समता श्री ने प्रवचन प्रारंभ करते हुए कहा ह्न ''आज **अहिंसा परमो धर्मः** का नारा विश्वविख्यात है। भगवान महावीर के नाम से तो अहिंसा का नाम जुड़ा ही हुआ है, महात्मा गाँधी ने भी अहिंसा के नाम पर ही भारत को आजाद कराया है। इसकारण आज विश्व में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो अहिंसा शब्द से परिचित न हो।

वैसे भी हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह संग्रह को सारी दुनिया पाप मानती है और अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पुण्य व धर्म मानती है।

रामायण, महाभारत, गीता जैसे जगप्रसिद्ध ग्रन्थों में भी इन पुण्य-पाप रूप क्रियाओं का ही विस्तृत कथन होने से सारा जगत इनसे सामान्यतः सुपरिचित है।

हिंसा में प्रवृत्त मानव भी सिद्धान्त रूप से अहिंसा को ही अच्छा मानते हैं; यह उनके आत्म कल्याण के लिए शुभ लक्षण है। जिसे आज वे सिद्धान्त रूप से सही मानते हैं, उन्हें कभी जीवन में अपना भी सकते हैं। अतः हिंसा/अहिंसा के स्वरूप और इनके हेयोपादेयता को चर्चित रखना भी अति आवश्यक है।

कल प्रवचन के अन्त में विराग ने प्रश्न किया था कि ह्न वस्तुस्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा का अस्तित्व कैसे संभव है ? अतः आज इसी विषय पर विचार करेंगे।

विराग की मूल समस्या यह है कि ह्न जब वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के अनुसार विश्व के समस्त द्रव्य-गुण एवं उनमें प्रति समय परिणमित होने वाली पर्यायें पूर्ण स्वतंत्र हैं, कोई भी द्रव्य-गुण-पर्यायें किसी अन्य द्रव्य-गुण-पर्यायों के कर्ता-धर्ता नहीं है और कोई भी द्रव्य, अन्य द्रव्य के परिणमन में किंचित् मात्र भी हस्तक्षेप नहीं करता तो फिर हिंसा-अहिंसा की स्थिति क्या बनेगी ?

सर्वज्ञता के आधार पर आगम भी इसी बात का समर्थन करता कि ह्न

होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम?

यह आत्मगीत तो सम्पूर्ण जैन जगत में प्रचलित हैं।

उपर्युक्त वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के अनुसार जब न केवल जन-जन की, न केवल जीव मात्र की; बल्कि पुद्‌गल के एक-एक परमाणु के परिणमन की स्वतंत्रता है तो ऐसी स्थिति में हिंसा/अहिंसा की स्थिति क्या बनेगी ? क्या जीवों की रक्षा करने, दया करने और हिंसा, झूठ आदि पाप न करने का उपदेश व्यर्थ नहीं हो जायेगा?''

माँ ने आगे कहा ह्न ''विराग की सोच बहुत गजब की है, उसके तर्क सटीक हैं, युक्तियाँ प्रबल हैं। देखो ! विराग ने आगम भी पढ़ लिया है। तभी तो वह आचार्यों के आगम को प्रस्तुत करते हुए कहता है ह्न ''यह वस्तु स्वातंत्र्य और हिंसा-अहिंसा की बात किसी व्यक्ति विशेष की मान्य या किसी दर्शन विशेष में उल्लिखित 'अवधारणा' मात्र नहीं है, मनमानी सोच नहीं है; अपितु यह सत्य तथ्य हैं सम्पूर्ण विश्वस्तरीय जैन/जैनेत्तर आगम (शास्त्र-पुराण) इसके लिए समर्पित है। जो खोजेगा वह वस्तु स्थिति की तह तक कभी न कभी तो पहुँच ही जायेगा।

सामान्यतः सभी धर्मों में और आम आदमियों के सोच के अनुसार प्रायः अहिंसा/हिंसा की एक यही परिभाषा की जाती है कि जीवों को मारना/सताना या दुःख देना हिंसा है एवं प्राणियों का घात न होना या उनकी रक्षा करना अहिंसा है।

किन्तु यह परिभाषा परिपूर्ण नहीं है। इसी लोक प्रचलित परिभाषा के कारण विराग के मन में ये प्रश्न खड़े हुए हैं। वस्तुतः हिंसा/अहिंसा का स्वरूप ही कुछ और है।

आचार्य कहते हैं आगम में लिखा है कि ह्न जीवघात होने पर भी यदि व्यक्ति का इरादा घात करने का नहीं हो तो उसे हिंसक नहीं माना जाता। जीवघात तो अनेक कारणों से हो जाता है; होता ही रहता है; जैसे ह्न प्राकृतिक प्रलय, तूफान, बाढ़, महामारी, आगजनी, भूकम्प आदि अनेक ऐसी घटनायें होती ही रहती हैं, जिनमें असंख्य मानव, पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े और पेड़-पौधों तक का घात हो जाता है, फिर भी हिंसा का पाप किसी को नहीं लगता। उसे हिंसा कहते भी नहीं है। **(शेष पृष्ठ 5 पर ....)**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 32

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

''जो पहले विद्यमान हो, उसी की उत्पत्ति को सत्-उत्पाद कहते हैं और जो पहले विद्यमान न हो, उसकी उत्पत्ति को असत्-उत्पाद कहते हैं।

जब पर्यायों को गौण करके द्रव्य का मुख्यतया कथन किया जाता है, तब तो जो विद्यमान था, वही उत्पन्न होता है, (क्योंकि द्रव्य तो तीनों काल में विद्यमान है); इसलिए द्रव्यार्थिकनय से तो द्रव्य को सत्-उत्पाद है और जब द्रव्य को गौण करके पर्यायों का मुख्यतया कथन किया जाता है, तब जो विद्यमान नहीं था, वह उत्पन्न होता है (क्योंकि वर्तमान पर्याय भूतकाल में विद्यमान नहीं थी), इसलिए पर्यायार्थिकनय से द्रव्य के असत्-उत्पाद है।

यहाँ यह लक्ष्य में रखना चाहिये कि द्रव्य और पर्यायें भिन्न-भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं; इसलिए पर्यायों की विवक्षा के समय भी, असत्-उत्पाद में, जो पर्यायें हैं; वे द्रव्य ही हैं और द्रव्य के विवक्षा के समय भी, सत्- उत्पाद में जो द्रव्य है; वे पर्यायें ही हैं।''

यहाँ द्रव्य की दृष्टि है। पर्याय तो एकसमय में बंधी है। आगे वह थी ही नहीं और भविष्य में भी वह नहीं रहेगी। जब हमारी दृष्टि अनादि-अनंत वस्तु पर जाएगी, तभी यह वर्तमान पर्याय द्रव्य में विद्यमान है, वह स्वकाल में प्रगट हुई है ह्न ऐसा समझ सकते हैं।

यहाँ पर्यायों को अभाव करके कथन नहीं किया गया है; अपितु पर्यायों को गौण करके कथन किया है। गौण करने से यह आशय है कि उसके बारे में चुप्पी साधना। सिर्फ ज्ञान में, वाणी में ही मुख्य-गौण की व्यवस्था है। मुख्य-गौण की व्यवस्था जिस वस्तु के बारे में की जा रही है; उस वस्तु में कुछ नहीं हो रहा है 'मुख्य-गौण करना' यह इसके ज्ञान की ही प्रक्रिया का नाम है। इस व्यवस्था को इसलिए भी मानना पड़ेगा; क्योंकि दो पर्यायें एकसाथ नहीं रह सकती है; नहीं तो सम्यग्दर्शन व मिथ्यादर्शन ह्न ये दोनों पर्यायें एकसाथ माननी पड़ेगी।

मुमुक्षुओं को लक्ष्य में रखकर कुन्दकुन्द शतक में पंचास्तिकाय की पाँच गाथाएँ संकलित हैं; जिनका हिन्दी पद्यानुवाद इसप्रकार हैं ह्न

उत्पाद-व्यय-ध्रुवयुक्त सत्, सत् द्रव्य का लक्षण कहा।
पर्याय गुणमय द्रव्य है, यह वचन जिनवर ने कहा।।५५।।
पर्याय बिन ना द्रव्य हो, ना द्रव्य बिन पर्याय ही।
दोनों अनन्य रहें सदा, यह बात श्रमणों ने कही।।५६।।
द्रव्य बिन गुण हो नहीं, गुण बिना द्रव्य नहीं बने।
गुण द्रव्य अव्यतिरिक्त है, यह कहा जिनवरदेव ने।।५७।।
उत्पाद हो न अभाव का, ना नाश हो सद्भाव में।
उत्पाद व्यय करते रहें, सब द्रव्य गुण पर्याय में।।५८।।

सौभाग्य की बात यह है कि पंचास्तिकाय एवं प्रवचनसार दोनों ही कुन्दकुन्दचार्य के ग्रन्थ हैं। दोनों ग्रन्थों में द्रव्य-गुण-पर्याय की अभिन्नता बताई गई है।

द्रव्य से पर्यायों को सर्वथा भिन्न माननेवालों को इन गाथाओं में व्यक्त भाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

अब ११२ वीं गाथा के भावार्थ का अध्ययन करते हैं, जो इसप्रकार हैह्न

''जीव मनुष्य-देवादिक पर्यायरूप परिणमित होता हुआ भी अन्य नहीं हो जाता, अनन्य रहता है, वह का वही रहता है; क्योंकि 'वही यह देव का जीव है, जो पूर्वभव में मनुष्य था और अमुक भव में तिर्यंच था' ऐसा ज्ञान हो सकता है।

इसप्रकार जीव की भाँति प्रत्येक द्रव्य अपनी सर्व पर्यायों में वह का वही रहता है। अन्य नहीं हो जाता, अनन्य रहता है। इसप्रकार द्रव्य का अनन्यपना होने से द्रव्य का सत्-उत्पाद निश्चित होता है।''

समयसार की १४वीं गाथा में जो अनन्य का बोल आया है; उसका भी यही आशय है कि नर-नारकादि पर्यायों में रहकर भी वह अन्य-अन्य नहीं हो जाता अनन्य ही रहता है; उन पर्यायों में जो एकसा रहा; वह मैं हूँ और जो बदल गया, वह मैं नहीं हूँ।

जहाँ-जहाँ भी आचार्यदेव ने अन्य और अनन्य की चर्चा की है, वहाँ-वहाँ नर-नारकादि पर्यायें ही ली हैं।

मैं मनुष्य नहीं हूँ, मैं देव नहीं हूँ, मैं नारकी नहीं हूँ, मैं राजा नहीं हूँ; ऐसा कहकर असमानजातीयद्रव्यपर्याय में एकत्वबुद्धि का ही निषेध किया है। इस प्रकरण को इस ११३वीं गाथा के भावार्थ में स्पष्ट किया हैह्न

''जीव के अनादि-अनन्त होने पर भी, मनुष्यपर्यायकाल में देवपर्याय की या स्वात्मोपलब्धिरूप सिद्धपर्याय की अप्राप्ति है अर्थात् मनुष्य, देव या सिद्ध नहीं है; इसलिये वे पर्यायें अन्य-अन्य हैं। ऐसा होने से उन पर्यायों का कर्त्ता, साधन और आधार जीव भी पर्यायापेक्षा से अन्यपने को प्राप्त होता है।

इसप्रकार जीव की भाँति प्रत्येक द्रव्य के पर्यायापेक्षा से अन्यपना है।

इसप्रकार द्रव्य को अन्यपना होने से द्रव्य के असत्-उत्पाद है ह्न ऐसा निश्चित होता है।''

यहाँ स्वात्मोपलब्धि को ही सिद्ध कहा गया है। चतुर्थगुणस्थानवर्ती को भी सिद्ध कहा जाता है अथवा ऐसा भी कह सकते हैं कि सिद्धपर्याय में स्वात्मोपलब्धि होती है। **(क्रमशः)**

(नींव का पत्थर, पृष्ठ 4 का शेष.....)

इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति किसी को मारने की सोचता है अथवा स्वार्थसिद्धि के लिए ऐसी योजना बनाता है, जिसमें जीव-हिंसा की संभावनायें होती हैं तो भले ही उसके सोच के अनुसार हिंसा न हो और उसकी वह हिंसक योजना फेल हो जाये और जीवों का घात न हो तो भी वह घात करने की सोचनेवाला और योजना बनानेवाला हिंसक है, अपराधी है; क्योंकि उसने सोचते एवं योजना बनाते समय जीव-हिंसा की परवाह नहीं की।

वस्तुतः हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध जीवों के मरने-जीने से नहीं है, बल्कि स्वयं के अभिप्राय से है; क्योंकि हिंसा में प्रमाद परिणति मूल है। यदि स्वयं का परिणाम क्रूर है और अभिप्राय जीवों के घात का है तो वह नियम से हिंसक हैं तथा अभिप्राय में क्रूरता और हिंसा का भाव नहीं है तो जीवों के मरने पर भी अहिंसक हैं। जैसे किसी डॉक्टर से ऑपरेशन करते-करते मरीज मर जाये तो भी उसको हिंसक नहीं माना जाता। अतः जीव के मरने-जीने से हिंसा-अहिंसा का सम्बन्ध नहीं है। **(क्रमशः)**

आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर की आमन्त्रण पत्रिका दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2005 तक

आध्यात्मिक शिक्षण–शिविर की आमन्त्रण पत्रिका दिनांक 31 जुलाई से 9 अगस्त, 2005 तक

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

समाचार संक्षेप

➠ काठमांडू (नेपाल) के प्रसिद्ध पशुपतिनाथ मंदिर में आग लगने से वहाँ की प्राचीन पाण्डुलिपियाँ, मूर्तियाँ एवं महत्त्वपूर्ण दस्तावेज नष्ट।

➠ ओलंपिक 2012 की मेजबानी लंदन (इंग्लैंड) को मिली। चुनाव में प्रतिद्वन्दी मेड्रिड, न्यूयार्क, पेरिस को पछाड़ा।

➠ गुजरात में हुई भारी वर्षा के कारण उद्योगों को नुकसान। लगभग 1 खरब रुपयों की हानि।

➠ 5 जुलाई को अयोध्या में हुये आतंकवादी हमले को नाकाम करते हुये भारतीय सुरक्षा बल के जवानों ने सभी आतंकवादियों को मार गिराया।

➠ 7 जुलाई को लंदन में हुये बम विस्फोटों में भारी जान-माल की हानि।

➠ दिनांक 24 से 26 जून, 2005 तक श्री शांतिनाथ दि. जैनमंदिर, गोपाल पुरा बाईपास, जयपुर में वेदीप्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

7. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में दिनांक 22 से 30 जून, 05 तक 15 वें ग्रीष्मकालीन बाल व युवा चेतना शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, पं. पुनीत जैन व पं. वैभव जैन अलीगढ़, श्री प्रकाशचन्दजी पाण्ड्या एवं श्री निर्मलजी बड़जात्या का प्रवचन, कक्षा तथा विधान के माध्यम से लाभ मिला। **ह्न विजय जैन**

8. सहारनपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन धार्मिक शिक्षा सदन, शोरमियान के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 19 जून, 2005 तक बाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रजी 'वीर' फिरोजाबाद, पण्डित अरहन्तवीर जयपुर, पण्डित पुनीत जैन अलीगढ़ द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मलाभ प्राप्त हुआ। शिविर के मध्य पधारे पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर के भी प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। **ह्न सुनील जैन**

परीक्षा केन्द्र अध्यक्ष ध्यान दें !

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, जयपुर द्वारा संचालित ग्रीष्मकालीन परीक्षायें दिनांक 13, 14 एवं 15 जुलाई के स्थान पर **अगस्त माह में दिनांक 13, 14 एवं 15** को सम्पन्न होगी।

ज्ञातव्य है कि विस्तृत परीक्षा कार्यक्रम जुलाई (प्रथम) अंक में प्रकाशित किया जा चुका है। **ह्न परीक्षा प्रबन्धक**

✲ पर्यूषण हेतु आमन्त्रण शीघ्र भेजें ✲

दशलक्षण पर्व में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4 बापूनगर, जयपुर से प्रवचनकार विद्वान बुलाने हेतु आमंत्रण-पत्र 31 जुलाई, 2005 तक भेजें; ताकि तदनुसार निर्णय करके निर्धारित स्थानों की सूची शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित की जा सके।

पत्र में अपना पूर्ण पता पिन कोड सहित तथा फोन नं. एस.टी.डी. कोड सहित अवश्य लिखें। यदि मोबाइल नं. हो तो वह भी लिखें।

वैराग्य समाचार

1. लखनऊ (उ.प्र.) निवासी इतिहासरत्न डॉ. ज्योतिप्रसादजी के लघुभ्राता समाज के वयोवृद्ध विद्वान, अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, शोधादर्श तथा समन्वय वाणी के प्रधान सम्पादक **श्री अजितप्रसादजी जैन** का अस्वस्थता के कारण दि. 25 जून को देहावसान हो गया है। आप तीर्थंकर महावीर स्मृति केन्द्र के माध्यम से समाज सेवा में रत थे।

2. नातेपुते (सोलापुर-महा.) निवासी सौ. मनीषा दोशी धर्मपत्नी श्री श्रेयांसजी दोशी का 40 वर्ष की अल्पायु में दिनांक 24 जून, 05 को प्रात: पौने पाँच बजे शांतपरिणामपूर्वक देहावसान हो गया है। आप धार्मिक विचारवन्त एवं स्वाध्यायप्रिय महिला थी। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक समिति एवं वीतराग-विज्ञान को कुल 1001/- रुपये प्राप्त हुए है।

3. उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती पहेलीबाई धर्मपत्नी श्री कस्तूरचन्दजी सिंघवी की स्मृति में स्वस्तिक ट्रेडर्स की ओर से वीतराग-विज्ञान को 500/- रुपये प्राप्त हुए हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो ह्न यही भावना है।

आगामी कार्यक्रम ....

डॉ. भारिल्ल को विद्यावारिधि की उपाधि

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 31 जुलाई, 05 की रात्रि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल को जैन समाज की ओर से भारत जैन महामण्डल, राजस्थान द्वारा **विद्यावारिधि** की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया जायेगा। ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल को यह उपाधि 22 जून,05 को आचार्य महाप्रज्ञजी के सान्निध्य में प्रदान की जानी थी। इसी अवसर पर श्रीमती सुन्दरकुमारी गदैया को भी **समाज गौरव** की उपाधि से सम्मानित किया जायेगा।

आप सभी को हमारा हार्दिक आमंत्रण है। **ह्न सम्पतकुमार गदैया**

देखना ना भूलें !

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन सोमवार से शनिवार तक प्रतिदिन रात्रि 10.25 से 10.45 बजे तक देखना ना भूलें।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (द्वितीय) 2005

J. P. C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127